

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 5

अंक : 2

फरवरी, 2005

| इस अंक में | |
|----------------------|------|
| 01-आर्ष वाणी | — 5 |
| 02-बोध कथा | — 5 |
| 03-संपादकीय | — 6 |
| 04-गुरुदेव की कलम... | — 7 |
| 05-सवाल आपके..... | — 12 |
| 06-वास्तु-शास्त्र | — 14 |
| 07-कहानी | — 16 |
| 08-क्या आप..... | — 16 |
| 09-कविता | — 17 |
| 10-कहानी | — 18 |
| 11-खोज | — 20 |
| 12-शास्त्र की.... | — 24 |
| 13-योग विज्ञान | — 26 |
| 14-रहस्य | — 28 |
| 15-बोलें तारे | — 30 |
| 16-समाचार दर्शन | — 33 |

एक प्रति : 5 रुपये
 वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
 आजीवन शुल्क : 700 रुपये

प्रकाशक :
 मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
 पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
 सराय काले खाँ बस टर्मिनल के
 सामने नई दिल्ली-110 013
 फोन नं. : 26315530, 31039709
 Website: www.manavmandir.com
 E-mail: contact@manavmandir.com

फरवरी

03

2005

: i js [kk & l j {kd eMy

- ❖ डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी ,न्यूयार्क
- ❖ डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
- ❖ श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
- ❖ श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युप्टन
- ❖ श्री आलोक ऋतु जैन, ह्युप्टन
- ❖ श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
- ❖ श्री गिरीश सुधा मेहता, ह्युप्टन
- ❖ श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिस्सार
- ❖ श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
- ❖ श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
- ❖ डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
- ❖ श्री जयचन्द लाल सेठिया, कलकत्ता
- ❖ श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद ,लाडनू
- ❖ श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
- ❖ श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
- ❖ श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
- ❖ श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
- ❖ डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
- ❖ श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
- ❖ श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
- ❖ श्री देवराज सरोजबाला, हिस्सार
- ❖ श्री राजेन्द्र कुमार कंडिया, हिस्सार
- ❖ श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
- ❖ श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
- ❖ श्री गुड्डू, संगरूर
- ❖ श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
- ❖ श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
- ❖ श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकामो
- ❖ श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
- ❖ श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
- ❖ श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
- ❖ श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युप्टन, अमेरिका
- ❖ श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
- ❖ श्री कृष्ण कुमार सरिता कक्कडिया, लुधियाना
- ❖ श्री कालू राम जतन लाल बरडिया, जयपुर
- ❖ श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
- ❖ श्री कालूराम गुलाब चन्द बरडिया, सरदारशहर
- ❖ श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
- ❖ श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनू
- ❖ श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
- ❖ श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
- ❖ श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
- ❖ श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
- ❖ श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
- ❖ श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
- ❖ श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिस्सार
- ❖ श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
- ❖ श्री पुरुषोत्तमदास हरीश कुमार सिंगला, लुधियाना
- ❖ श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री वीरबल दास सिंगला, संगरूर
- ❖ श्री अशोक कुमार सुनीता चोरडिया, जयपुर
- ❖ श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़

❖❖❖

: i js [kk & l j {kd eMy

फरवरी

04

2005

आर्ष-वाणी

पंचेंदियाणि, कोहं, माणं, मायं, लोभं य
दुज्जयं चैव अप्पाणं, अप्पे जिये जिया सब्बे।

भगवान महावीर

पांच इन्द्रियां श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस और स्पर्श तथा क्रोध मान, माया, लोभ ये चार कषाय आत्मा के लिए दुर्जय हैं। एक आत्मा को जीत लिया जाए तो ये सारे अपने आप जीते जाएंगे।

बोध-कथा

सर्वोत्तम न्याय

प्राचीन समय में एक अनुभवसिद्ध न्यायधीश के सामने तीन अपराधी समुपस्थित हुए। तीनों का अपराध एक सा था। न्यायधीश ने तीनों को एक निगाह से देखकर पहले को सजा सुनाते हुए कहा, "अरे। तुझे शर्म नहीं आयी? लानत है तेरे मनुष्य जीवन को।" इतना कहकर उसे छोड़ते हुए दूसरे से कहा, "तेरा अपराध बहुत बड़ा अपराध है। इसलिए तुझे पांच डंडे की मार खानी पड़ेगी। इसके साथ ही जज ने उसे पांच डंडे लगाकर छोड़ दिया।

तीसरे को सजा सुनाते हुए कहा—"तू भयंकर अपराधी है। इसलिए तुझे सिर मुंडा, मुंह पर कालिख पोत, गधे पर बिठाकर शहर में घुमाया जाएगा। इस आज्ञा पालन के बाद उसे छुट्टी मिली। न्यायाधीश के पास बैठे एक व्यक्ति ने तीनों समान अपराधियों को तीन प्रकार की सजा सुनाते देखकर जज से पूछा—"यह कौन सा न्याय है ? इतना फर्क कैसे? क्या यह पक्षपात नहीं है ?

न्यायाधीश ने गंभीरता से उत्तर दिया "यह मेरी आत्मा की आवाज का न्याय है, बिल्कुल सही न्याय। हां यदि तुझे गलत लग रहा हो तो तू एक बार जाकर उन तीनों की स्थिति को देख लो। फिर गलत और सही का निर्णय देना।

वह व्यक्ति गया और तीनों की स्थिति को देखकर अवाक् रह गया, क्योंकि जिस व्यक्ति को लानत दी गयी थी। वह बेहद दुःख के मारे आत्महत्या करने की तैयारी कर रहा था। जिस व्यक्ति को डंडे मारे गये थे वह व्यक्ति शर्म के मारे देश छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने की तैयारी कर रहा था। जिस व्यक्ति को गधे पर बिठाया गया था, वह अपनी मंडली में बैठा धडल्ले से शराब पी रहा था।

न्यायाधीश के पास आकर उस व्यक्ति ने अपनी गलती स्वीकार की और तीनों की स्थिति बताते हुए कहा, "आपकी आत्मा की आवाज से किया गया न्याय सर्वोत्तम न्याय था।

सम्पादकीय

प्रकृति का क्रूर प्रकोप

अभी कुछ समय पहले बच्चों की पत्रिका नंदन हाथ में आई। उपर हेडिंग छपा था 'बसन्त आया'। बसन्त तो आएगा तब आएगा लेकिन प्रलयकारी भूकंप अवश्य आया और उसने ऐसी विनाश लीला छोड़ दी। जिसकी कल्पना करते ही आदमी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

शास्त्रों में वर्णन आता है कि जब कलियुग अंतिम दौर से गुजरेगा तब धरती पर इन्सान का अस्तित्व नहीं के बराबर होगा यानी कुछ बीज स्वरूप जो इन्सान बचेंगे वे भी धरती पर नहीं रह सकेंगे क्योंकि धरती तो जलजलाकार हो जाएगी। सूर्य इतना प्रचंड रूप से तपेगा जिसमें प्राणी झुलस जाएंगे। वैज्ञानिक जिसको ओजोन परत कहते हैं। वह बिल्कुल खत्म हो जाएगी। जो थोड़े से प्राणी होंगे वे जमीन के खूब नीचे बिल बनाकर रहेंगे। रात को बाहर निकलेंगे तो दिन के ताप में झुलसे कोई प्राणी के शव पड़े होंगे। उनको खाकर गुजारा करेंगे।

यह बात हुई सर्वांगीण प्रलय की। उसी का आंशिक रूप अभी हिन्द महासागर में केंद्रित दक्षिण पूर्व एशिया से उठी भूकंप जनित सामूद्रिक विभीषिका ने तूफान का रूप लेकर दक्षिण भारत के तटवर्ती इलाकों में तमिलनाडू पांडिचेरी, केरल, आंध्रप्रदेश से लेकर उड़ीसा तक कितनी तबाही मचाई वह किसी से छिपी नहीं है। इसमें मृतकों की संख्या दस हजार या उससे भी ज्यादा थी कुछ कहा नहीं जा सकता।

आज के वैज्ञानिकों की पहुंच बहुत ऊंची है। लेकिन इस प्रकृति की लीला के सामने तो उन्होंने भी हार मान ली अगर वैज्ञानिकों को आने वाली विपदा का पहले पता चल जाए तो कम से कम इन प्राकृतिक प्रकोपों को रोक तो नहीं सकते लेकिन विनाश लीला में लीले गए प्राणियों को तो बचाया जा सकता है। सुना है पक्षी इस मामले में वैज्ञानिकों से भी आगे हैं। उनको संभावित विपदा का पहले आभास हो जाता है। खैर जो भी हो ऐसी भयंकर विपत्ति से भगवान बचाए। या तो पूरे संसार को लील ले जिससे किसी को शोक संतप्त न होना पड़े। जिनके बच्चे उनके सामने समुद्र की लहरों में बहकर खत्म हो जाए उनका फिर क्या जीना। परमात्मा सबकी आत्मा को शांति दे।

○ निर्मला पुगलिया

कलकत्ता यात्रा के संदर्भ में



इस बार कवि मनिषी पदमश्री श्री कन्हैयालाल सेठिया के आत्मीय आमंत्रण तथा भाक्तिपरायणा श्रीमती कमलीदेवी अग्रवाल के भाव भरे अनुरोध पर जब मैंने कोलकत्ता महानगर की यात्रा का निर्णय लिया, तो मेरे मन-मस्तिष्क में पिछली कलकत्ता यात्राओं की मधुर स्मृतियां तैरने लगीं।

प्रथम कलकत्ता-यात्रा सन् 1959 में

सबसे पहली बार मेरी कलकत्ता-यात्रा पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के साथ सन् 1959 में हुई। उस समय मेरी उम्र का बीसवां वर्ष चल रहा था। मुनि-दीक्षा का मेरा सातवां वर्ष था। स्पष्टतः वह मेरा विद्या अध्ययन का समय था। किंतु आचार्यवर की सुदीर्घ यात्राएं भी चल रहीं थीं। इसलिए विद्या-अभ्यास और पद-यात्राओं द्वारा भारत भ्रमण दोनों साथ साथ चल रहे थे। पद-यात्राओं के कारण होने वाली अध्ययन क्षति को चातुर्मास प्रवास में पूरा करने का विशेष प्रयास होता। आचार्यश्री की सूझबूझ तथा कुशल मार्ग-दर्शन का ही यह परिणाम था कि विद्या-अध्ययन तथा पद-यात्राओं द्वारा भारत-भ्रमण दोनों का ठीक-ठीक निर्वाह हो रहा था।

उस समय मेरा अध्ययन संस्कृत भाषा और आगम ज्ञान पर विशेषतः केन्द्रित था। उस युग में विद्या अभ्यास के लिए कंठस्थ प्रणाली पर अधिक बल दिया जाता। संस्कृत भाषा सीखने के लिए संपूर्ण व्याकरण तथा शब्द कोष को कंठाग्र करना होता। उसके बाद ही साहित्य में प्रवेश मिल पाता। इसी तरह आगम-ग्रंथों को भी कंठस्थ करना होता। किसी भी ग्रंथ को कंठाग्र करना मुझे बहुत आसान लगता। कलकत्ता प्रवास में उत्तराध्ययन सूत्र को कंठाग्र करना आरंभ किया। मन में एक संकल्प जगा कि प्रति दिन एक अध्ययन मुखस्थ करना है। इसका अर्थ यह था कि उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस अध्ययन छत्तीस दिनों में कंठस्थ करने हैं।

उधर कलकत्ता के उपनगरों में आचार्यवर के विहार का सिलसिला शुरू हो गया। विहार के साथ-साथ आगम कंठस्थ का संकल्प निभाना संभव नहीं लग रहा था। मैंने आचार्य श्री से महासभा-भवन में ठहरने की अनुमति चाही। महासभा में प्रवचन का सिलसिला रखने के लिए आचार्यश्री ने मुनिश्री सुमेरमलजी

लाडनू को वहां रखने का निश्चय किया। उनके साथ मैं तथा मेरे सहपाठी मुनि मनोहर लालजी भी महासभा भवन में ठहर गए।

हम दोनों विद्यार्थी मुनि अपने अध्ययन में लगे रहते। प्रवचन तथा जन संपर्क का कार्य मुनिश्री सुमेरमलजी देखते। एक दिन प्रवचन से पूर्व आवश्यक कार्य वश मुनिजी को कहीं जाना जरूरी हो गया। अब प्रश्न था प्रवचन कौन करें ? हम दोनों विद्या-अध्ययन तक ही सीमित थे। आज तक कभी प्रवचन से वास्ता ही नहीं पड़ा था। उस स्थिति में एक घंटा प्रवचन करना हिमालय की चढ़ाई जैसा कठिन लग रहा था। फिर हम दोनों मुनियों में वरिष्ठ मैं था, इसलिए प्रवचन का दायित्व मेरे पर आना ही था।

प्रवचन के लिए मैंने उत्तराध्ययन सूत्र के नौवें अध्ययन नमि पव्वज्जा को चुना। इसमें नमि-राजर्षि की पूर्व-जन्म कथा, इस जन्म की वैराग्य कथा के साथ-साथ नमि राजा और ब्राह्मण वेषधारी इन्द्र देवता के बीच हुए प्रश्न-संवाद का विस्तार से वर्णन है। मेरा विश्वास था इतनी सारी प्रवचन सामग्री से एक घंटे का समय निकल ही जाएगा। किंतु जैसा हर वक्ता के साथ लगभग होता है, प्रवचन सामग्री जैसे विस्मृत हो गई। बहुत बुरा हाल था मेरा। उधर मेरे सामने सैंकड़ों भाई-बहिन प्रवचन सुनने के लिए बैठे थे। एक बालक मुनि के मुख से प्रवचन सुनने के लिए बैठे थे। एक बालक मुनि के मुख से प्रवचन सुनने की विशेष उत्सुकता भी सबके मन में थी।

मैंने जैसे-तैसे अपने को समझाया। मनः स्थिति को सहज बनाने की कोशिश की। अपने को समझाया-प्रवचन करने के अलावा कोई रास्ता नहीं। और फिर नवकार-महामंत्र के कीर्तन के साथ बोलना शुरू किया। नमि-पव्वज्जा अध्ययन की साठ गाथाएं हैं। इन गाथाओं के विवेचन में साठ प्रवचन बड़ी आसानी से किये जा सकते हैं। किंतु मैं उस प्रथम वक्तव्य में करीब पूरा अध्ययन जैसे एक सांस में पढ़ गया। घड़ी की ओर देखा-अभी पैंतालीस मिनट हुए थे। अर्थात् अभी पन्द्रह मिनट बोलना शेष है। अब क्या किया जाए। सोच ही रहा था कि इतने में मुनिश्री सुमेरमलजी का आना हो गया। तब कहीं जान में जान आई। आज जब भी यह संस्मरण स्मरण में आता है तो अपने पर मुझे खूब हंसी आती है। इतना अवश्य है तुतलाते बच्चे की बोली की तरह बालक मुनि के मुख से प्रवचन सुनने का आनंद लोगों ने खूब लिया।

प्रथम कलकत्ता -यात्रा में आचार्यवर का करीब नौ माह का प्रवास बहुत प्रभावशाली रहा। यद्यपि विरोध-पक्ष ने जी-भर कर विरोध भी किया। किंतु

आचार्यश्री की कार्य-शैली रचनात्मक होने के कारण विरोध स्वयं निरस्त हो गया। मेरे अपने स्तर पर उस यात्रा की उल्लेखनीय घटना शायद इसी को कहा जा सकता है। वैसे संस्कृत भाषा और आगम-ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ने का अच्छा अवसर इस प्रवास में मुझे अवश्य मिला। जो जीवन भर के लिए एक उपलब्धि बन गया।

संस्कृत भाषा और आगम पाठ के साथ-साथ कविताएं लिखने का अभ्यास क्रम भी इसी यात्रा में चलता रहा। कविता के संस्कार जन्म-जात कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। किंतु कविता के बीजों को विधिवत् सिंचन कलकत्ता यात्रा से पूर्व सन् 1958 में कानपुर चातुर्मास में मिला। और सिंचन देनेवाले थे कवि-मनिषी श्री कन्हैयालाल सेठिया। सेठियाजी ने कविता रचना के छंद विधानों के साथ-साथ मुझे उस समय के प्रसिद्ध कवियों में से श्री बच्चन और श्रीमती महादेवी वर्मा के कविता संग्रहों का पारायण भी करवाया। कविता-रचना के लिए मार्ग दर्शन भी किया। इसलिए मैं विद्या गुरु के रूप में सेठियाजी का सम्मान करता हूं। काव्य रचना का सिलसिला उस कलकत्ता यात्रा में भी चलता रहा। इस प्रकार वह कलकत्ता यात्रा मेरे विद्या अध्ययन को ही प्रमुखतः समर्पित रही।

दूसरी कलकत्ता यात्रा सन् 1975 में

मेरी दूसरी कलकत्ता यात्रा सन् 1975 में विचित्र मनःस्थिति और विषम परिस्थितियों में हुई। विचित्र मनःस्थिति इसलिए कि सन् 1974 का मेरा चातुर्मास राजगृही पावापुरी में हुआ था। उन सुरम्य पहाड़ियों के एकान्त शान्त पवित्र वातावरण में अध्यात्म की गहराइयों में उतरने का वह एक अनुपम अवसर था। भगवान महावीर की उस तपोभूमि और निर्वाण भूमि में जी भरकर स्वाध्याय ध्यान और चिंतन मनन-लेखन की वे स्वर्णिम घड़ियां थीं। राजगृही में प्रवेश करते-करते मन में कविता उतरी-

**“तेरा मन पावन गंगा है डुबकी लेलूं
इन्द्र धनुष सा सतरंगा है डुबकी लेलूं
अंबर में लिपटा भी तेरा रूप दिगम्बर
नील गगन सा यह नंगा है डुबकी लेलूं।”**

उस शांत पवित्र समाधिपूर्ण वातावरण के बिल्कुल विपरीत भीड़ भाड़ भरे कोलाहलपूर्ण कलकत्ता महानगर के लिए जब आचार्यश्री का आदेश मिला तो अनिच्छापूर्वक उसे शिरोधार्य करना पड़ा। महानगर की सीमा में घुसते-घुसते

अन्तर्मन ने कहा-

कोलाहल है धुआं धुआं है कहां आ गए ?

यह खाई है उधर कुआं है कहां आ गए ?

सोचा था शायद बस्ती में मिले आदमी

किन्तु सुन रहे हुआं-हुआं है कहां आ गए?

वैसे तो आचार्यश्री और मेरे बीच एक अभेद्य अभिन्नता का साक्षी पूरा समाज रहा है। एक बार विशेष प्रसंग वश जब मुझे कुछ समय के लिए मुम्बई जाना पड़ा, तो मैंने लिखा-

**यों तो यह दूरी सचमुच एक मजबूरी है
पर नजदीकी समझने के लिए शायद जरूरी है
है यह एक घुमाव इस सपाट जीवन में
देखें सूरज और दिशाओं में कितनी दूरी है।**

इतनी अभिन्नता में दो इच्छाएं होने का प्रश्न नहीं उठता। फिर भी यहां कलकत्ता के लिए मेरी अनिच्छा का बड़ा कारण उस समय के कलकत्ता समाज की विषम परिस्थितियां थीं। पूरा समाज एक अवांछित दिशाहीन संघर्ष में से गुजर रहा था। उस संघर्ष का प्रमुख कारण भी कुछ शीर्षस्थ व्यक्तियों की राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं थीं। मैंने संघर्ष, कठिनाईयों से घबराना कभी नहीं सीखा। किंतु राजनीति के दलदल से अपने को बचाने की सदा कोशिश की है। उस बचाव के लिए बड़े-बड़े पद और सम्मान को तुकुराने में मैंने कोई हिचकिच भी नहीं की है। किंतु कलकत्ता समाज का यह संघर्ष राजनीति प्रेरित था। इसीलिए मैंने आचार्यश्री के समक्ष अपनी अनिच्छा प्रकट की। परन्तु उस संघर्ष को शांत करने के लिए आचार्य श्री को भी किसी तटस्थ और विश्वस्त व्यक्ति की जरूरत थी। इसलिए उन्होंने कलकत्ता के लिए मेरा ही चुनाव किया। मैंने भी उनके निर्णय का सम्मान करते हुए कलकत्ता यात्रा के लिए हामी भर ली।

महानगर प्रवेश का प्रथम प्रवचन

कलकत्ता प्रवेश का प्रथम दिन। हजारों भाई बहिनों की उपस्थिति। प्रवचन के प्रति सबके चेहरों पर उत्सुकता। किसका समर्थन होगा, किसका समर्थन नहीं होगा-सबके मनों में एक जिज्ञासा। मैंने भारत की आध्यात्मिक विरासत पर चर्चा करते हुए कहा-आपके और मेरे बीच केवल एक ही रिश्ता है, वह है आध्यात्मिक रिश्ता। केवल उसी रिश्ते के नाते मैं आपके बीच आया हूं। आप भी मेरे पास



केवल इसी रिश्ते के नाते आएँ, ऐसा मैं चाहता हूँ। इसके सिवाय मुझे किसी विषय में कोई रुचि नहीं है। मेरे लिए न कोई पक्ष है, न कोई विपक्ष। इसलिए विवादित विषय पर मेरे से बात करने की कोई कोशिश न करें। संत आगमन से अधिक से अधिक आप आध्यात्मिक लाभ उठाएँगे, ऐसा मेरा विश्वास है। मेरे स्पष्ट विचारों का गहरा प्रभाव जन-मानस पर रहा। मेरी कार्य शैली की घोषणा से सबके मन को संतोष हुआ। केवल घोषणा ही नहीं, मैंने तदनु रूप धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की पूरी संयोजना समाज के समक्ष रखी। महासभा भवन में नियमित प्रवचनों के साथ-साथ महानगर के प्रमुख सभागार महाजाति सदन, संगीत कला मंदिर, शहीद मीनार, जैन भवन, नेशनल लाइब्रेरी आदि स्थानों पर आयोजनों समारोहों की धूम रही।

सन् 1959 की कलकत्ता यात्रा में जहाँ एक घंटा प्रवचन मेरे लिए पर्वत शिखर पर आरोहण के सामने था, वहाँ 1975 के कलकत्ता प्रवास में पन्द्रह महिनों तक लगातार प्रवचन हुए ही, संवत्सरी महापर्व जैसे विशेष आयोजनों पर पांच पांच छह छह घंटे प्रवचन भी हुए। ऐसे ही एक प्रसंग पर मैंने अपने पर ही चुटकी लेते हुए कहा था—प्रवचन के समय कभी मैं बार-बार घड़ी की ओर देखता था। और आज घड़ी मेरी और बार-बार देखती है। प्रभु का आशीर्वाद कहीं या सरस्वती मां की कृपा, हजारों हजारों की संख्या में लोगों ने घंटों-घंटों मंत्र मुग्ध होकर मुझे सुना है। मैं इसे प्रभु का आशीर्वाद और मां सरस्वती का प्रसाद समझता हूँ।

कलकत्ता प्रवेश के समय मुझे एक भाई ने कहा—प्रवेश के लिए आज का दिन आपको किसने सुझाया ? आज तो ज्वालामुखी योग हैं। ज्योतिष विद्या को एक विद्या मानते हुए भी मैं इस पर अन्धा विश्वास नहीं करता हूँ। उसकी बात पर मैं केवल मुस्करा दिया। एक सकारात्मक भविष्य को मन में संजोए एक मुक्तक मन में उभरा—

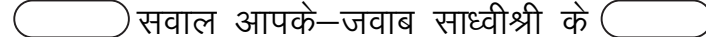
क्या दर्द का असर कभी दीवानों पर हुआ है ?

अंगारों का असर क्या परवानों पर हुआ है ?

तुम क्या डरा रहे हो हमें इन तूफानों से

हमारा तो जन्म ही तूफानों पर हुआ है।

पूरा कलकत्ता प्रवास हजार विघ्न बाधाओं के बावजूद अनेक दृष्टियों से विशिष्ट उपलब्धियों का रहा, यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं का जिक्र करना यहाँ उचित ही होगा। **कमशः**



सवाल आपके—जवाब साध्वीश्री के

पशु-पक्षियों से भी गिरा हुआ इन्सान

संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुला श्री

सवाल

महाराज श्री! हमारे घर में एक नीम का पेड़ है। उस पर कौओं ने अपना घोंसला बनाया। बच्चे जब घोंसलें की छेड़ छाड़ करते तो जिस कौए और कौआ ने घोंसला बनाया था, वे तो बच्चों को हटाने में लग ही जाते आस पास के और कौए भी उनकी हेल्प करने के लिए आ जाते।

इसी तरह हमने देखा हमारे बगल में सामने एक पेड़ था। वहाँ एक कौआ मर गया तो उसकी संवेदना में पचासों कौए इकट्ठे हो गए। वे अपनी भाषा में काफी देर तक शोक संताप करके फिर चले गए। एक तरफ तो पशु पक्षियों को देखिए दूसरी तरफ इन्सान को देखिए कि पड़ोस में चाहे कोई रो रहा हो चीख रहा हो किसी को किसी की परवाह नहीं है। अपने बगल में एक इन्सान भूखा प्यासा बीमार पड़ा है। खुद गुलछर्रे उड़ा रहा है लेकिन इन्सान के दिल में हया दया नहीं है। इतना संवेदना हीन कैसे हो गया इन्सान।

एक जमाना था। व्यक्ति मिल बांट कर खाते थे। एक दूसरे के सुख-दुःख में शरीक होते थे। अब तो केवल दिखावा रह गया है। कोई किसी के दुःख दर्द में जाएगा भी तो औपचारिक स्तर पर। असलियत में सबके दिल पत्थर हो गए हैं। एक तरफ किसी की लाश पड़ी रहती है। दूसरी तरफ बड़े जोर शोर से जश्न मनाया जाता है। यह है आज के मानव की मानवीय संवेदना।

जवाब—प्रोफेसर साहब! ऐसी बात तो नहीं है। कि इन्सान पशुपक्षियों से भी गया बीता है। आप देखिए अभी पिछले महीने पंजाब में ट्रेन दुर्घटना हुई। आसपास के गांवों और खेतों के लोग कैसे दौड़कर सहायता के लिए पहुंच गए। और भी समय-समय पर बाढ़, तूफान, भूकंप, प्लेन, कार दुर्घटना आदि पर तुरन्त लोग इकट्ठे हो जाते हैं। अभी हिन्द महासागर में केन्द्रित दक्षिण पूर्व एशिया से उठी भूकंप जनित सामूद्रिक विभीषिका ने तूफान की शकल में दक्षिण भारत के तटवर्ती इलाकों में तमिलनाडू, पांडिचेरी, आंध्र प्रदेश से लेकर उड़ीसा तक कितनी तबाही मचाई। जिसमें मृतकों की संख्या दस पन्द्रह हजार या उससे भी ज्यादा इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। इस विनाश लीला ने वृद्ध, बच्चे, स्त्री, पुरुषों को किसी को भी नहीं छोड़ा।



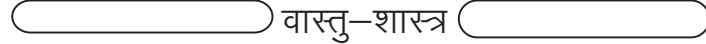
प्रकृति के प्रकोप का शिकार कभी भी कोई भी हो सकता है। अतः इन्सान को निर्दयी और संवेदना हीन तो कभी नहीं होना चाहिए। पर प्रोफेसर साहब! आप ठीक कहते हैं। कहीं इन्सानियत अभी जीवित है तो कहीं कहीं पशु पक्षियों से गए गुजरे लोग भी मिलेंगे। अभी अभी जो सामान सरकार के द्वारा या संस्थाओं के द्वारा भेजा गया वह भी विपदा ग्रस्त लोगों तक कहां पहुंच पाया। उस सामान को लोग दुकानों पर बेचते हुए देखे गए।

कुछ दिन पूर्व छोटे पर्दे पर एक दृश्य दिखाया गया। जिस ठेकेदार को 10 लाख रुपये देकर अडमान द्वीप में तम्बू टेन्ट की आपूर्ति का कार्य दिया गया उसने पांच लाख की पहली खेप में ही गुरु घंटाली कर दी। दूसरी खेप पकड़ ली गई। यह व्यक्ति कोई और नहीं किसी मंत्री का रिश्तेदार ही है। ऐसे मनुष्य की मनुष्यता को लानत है।

पशुता को भी लज्जित करने वालों को शर्म आनी चाहिए। सुनामी पीड़ितों और मृतकों पर भी जो व्यापार के अवसर खोजें वैसे नराधम किस मानसिकता की उपज हैं। कुछ समझ में ही नहीं आता।

अब दिन दिन कलियुग का प्रभाव बढ़ेगा। वैसे वैसे आदमी की मति भ्रष्ट होती चली जाएगी। कहते हैं आज से दस हजार वर्ष पूर्व मनुष्य अपने बगल में सोई अपनी पत्नी को भी खा जाता था। लेकिन वह तो पेट की भूख थी। आज तो सबसे ज्यादा भ्रष्ट और निर्दयी वे लोग देखे जा रहे हैं जो सब तरह से भरे, पूरे समर्थ हैं। सर्वत्र पहुंच वाले हैं। वे गरीबों और आपदा ग्रस्तों का शोषण करते हैं। उनके साथ अन्याय करते हैं। ऐसा करने के लिए कैसे इजाजत देती है उनकी आत्मा ? इसी तरह होस्पिटलों में भी रोगियों के साथ ऐसा सलूक होता है। पांच दिन में होने वाले इलाज में महीना महीना लगा दिया जाता है।

पैसे के लालच में यहां तक किया जाता है कि दो दो तीन तीन दिन मृत रोगी को कृत्रिम सांस देते रहेंगे और छुट्टी नहीं देंगे। तो कुछ डाक्टर ऐसे भी हैं जो निःस्वार्थ भाव से तन, मन, धन, अपना सब कुछ मरीजों पर लगा देते हैं। अभी जब तक पूरा कलियुग नहीं आएगा। उतने दोनों ही प्रकार के मनुष्य बराबर बराबर रहेंगे। जब कि पशु पक्षी अपनी जाति के सुख दुःख को बंटाने के लिए पूरी तरह जुट पाते हैं। उन पर कलियुग का कोई असर नहीं है।



भूकम्प एवं वास्तु विज्ञान

शास्त्रानुसार यदि वायु मण्डल का भूकम्प हो तो 200 योजन तक, अग्नि मंडल का हो तो 10 योजन तक, वरुण मंडल का हो तो 180 योजन तक और इन्द्र मंडल का हो तो 60 योजन तक कम्पित करता है।

सूर्य ग्रहण व चंद्र ग्रहण के पश्चात् 3, 13, 15, 30, 45, 75 व 90 दिन के आसपास भूकम्प आता है। चन्द्र ग्रहण के बाद समुद्र व नदी के किनारे और सूर्य ग्रहण के बाद पहाड़ी इलाकों में भूकम्प आता है। इसका कारण सूर्यग्रहण में सूर्य व पृथ्वी के बीच चंद्रमा आ जाता है। चंद्र व सूर्य दोनों ही पृथ्वी को अपनी ओर खींचते हैं, जिससे कि पृथ्वी की ऊपरी प्लेट पर तनाव आ जा जाता है और परिणाम स्वरूप यह प्लेट टूटने की संभावना बनती है। चंद्रग्रहण में पृथ्वी की स्थिति चंद्रमा व सूर्य के बीच होती है। अतः दोनों तरफ से तनाव आने के कारण समुद्री व तटीय इलाकों में भूकम्प आने की संभावना बढ़ जाती है।

वास्तु विज्ञान में भवन की योजना, डिजाइन 'अभिकल्पन' स्पेस, तलों की उंचाईयां, दरवाजे व खिड़की का स्थान निर्धारण व भवन की कुल उंचाई इत्यादि का ध्यान रखा जाता है। नीचे कुछ प्रमुख बिन्दु दिये जा रहे हैं—

1. वास्तु विज्ञान के अनुसार दक्षिण उंचा व उत्तर नीचा होना चाहिए।
भारत में भूकम्प पर हुए शोध से पता चलता है कि भूकम्प दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की तरफ क्रियान्वित होता है। अगर भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग नीचा व हल्का रहे व उत्तर-पूर्वी भारी व उंचा हो तो भूकम्प का झटका उत्तर-पूर्व का हिस्सा सहन नहीं कर पायेगा और इस हिस्से के गिरते ही पूरा भवन क्षतिग्रस्त हो जाएगा। यह बात जलबपुर के भूकम्प के दौरान वास्तु अध्ययन में भी पाई गई। दक्षिण ढाल वाले भवनों को भूकम्प से नुकसान अधिक हुआ, जबकि पूर्वी ढाल वाली छतों के भवनों में अपेक्षाकृत क्षति कम हुई। अगर भवन का दक्षिण-पश्चिम भाग उंचा रहेगा, व भारी होगा तो भूकम्प का झटका सह पाने में सक्षम रहेगा व भवन खड़ा रहेगा।
2. वास्तु शास्त्र विशेष रूप से कहता है कि नीचे की मंजिल के दरवाजे, खिड़की की लाइन में ऊपर की मंजिल के दरवाजे-खिड़की नहीं होने चाहिए, पर आज के युग में खिड़की व दरवाजों की स्थिति एक के ऊपर एक रखी जाती है। लातूर में

आए भूकम्प में वैज्ञानिकों ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि जिन मकानों में खिड़की, दरवाजे एक-दूसरे के उपर थे, उन मकानों में क्षति अधिक हुई।

3. वास्तु विज्ञान में स्पष्ट किया गया है कि नीचे की मंजिल से उपर की मंजिल की उंचाई कम होनी चाहिए। तल मंजिल की लंबाई व चौड़ाई के अनुपात में भवन की उंचाई निर्धारित की जानी चाहिए। नीचे की मंजिल का कुल भाग उपर की मंजिल से ज्यादा होना चाहिए। ऐसे भवन ज्यादा सुरक्षित होते हैं। इसके साथ ही भवन की उंचाई भी प्रतितल करीब 1-12 भाग कम की जानी चाहिए।

भुज भूकम्प के दौरान इंजीनियर्स के विशेषज्ञ दल द्वारा किए सर्वे में पता चला है कि जिन भवनों में भू-तल पर या तलघर में पार्किंग से प्रथम तल की उंचाई ज्यादा थी, उन भवनों को अधिक क्षति पहुंची है।

4. वास्तु शास्त्र में उल्लेख है कि भवनों की ऊंचाई उसकी चौड़ाई की 60 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। लेकिन आजकल बिना सोचे एक छोटे प्लाट जैसे 30 फीट चौड़े भूखंड पर भी 3 से 4 मंजिल ऊंचा भवन निर्मित कर दिया जाता है।

5. भवनों की संरचना पिरामिड आकार की होनी चाहिए यानि जमीन पर चौड़ाई सर्वाधिक व शीर्ष पर चौड़ाई शून्य होना श्रेष्ठ बताया है। जबकि आजकल कालम या स्तम्भ के आकार के भवनों की चौड़ाई व ऊंचाई समान रखी जाती है।

6. अभी तक आए भूकम्पों का अध्ययन करने से यही सुनिश्चित हुआ है कि जो मंदिर वास्तु नियमों के अनुरूप हैं, वे प्राकृतिक आपदा के बावजूद भी निर्विकार खड़े हुए हैं, पर इसके विपरीत 10 से 50 वर्ष पूर्व बने मंदिर, जो वास्तु नियमों के विरुद्ध बने थे। वे धराशयी हो गए। भुज में आए भूकम्प का सोमनाथ मंदिर पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। इसी प्रकार उड़ीसा के तूफान के बावजूद वहां के कई प्राचीन मंदिर बिना किसी क्षति के आज भी खड़े हैं।

अतः भूकम्प प्रतिरोधी मकान बनाने में प्रकृति के नियमों पर आधारित वास्तु को अपनाना सुरक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से सदा उपयुक्त माना गया है।

○ **पंकज अग्रवाल (इंजीनियर)**

जितना समय दूसरों की निन्दा करने में लगाते हो उतना समय अपने दोषों को दूर करने में लगाओ तो आप का कल्याण हो जाएगा।

इच्छाओं का कोई अन्त नहीं

○ साध्वी मंजुश्री

बादशाह सिकन्दर विश्वविजयी बन अपने देश जा रहा था। बीच में विशाल समुद्र को देखकर सोचने लगा कि समुद्र ने मेरी कितनी जगह रोक रखी है, फिर भी इसने कर नहीं चुकाया। सिकन्दर ने सेना को तुरन्त आदेश दिया कि समुद्र पर गोलाबारी करो। गोले बरसने लगे। समुद्र से आवाज आई बादशाह तुम क्या चाहते हो? सिकन्दर ने कहा—तुमने असीम जगह रोक रखी है इसका कर अदा करो। समुद्र ने तुरन्त उछाला मारा। तट पर धन के ढेर लग गये। सिकन्दर के आदेशनुसार वाहनों पर ६ लान लाद कर ले जाया जाने लगा लेकिन जितना ले जाते उससे अधिक वहां पर ढेर लग जाता। सिकन्दर और उसके साथी यह देखकर हैरान हो गये।

अन्त में सिकन्दर ने समुद्र से इस माया के बारे में पूछा। समुद्र से आवाज आई कि मनुष्य की एक खाली खोपड़ी लाओ। बादशाह के सैनिक एक खोपड़ी ढूँढ कर ले लाए। समुद्र ने कहा—इसे यहां पर पड़े हुए धन से भर दो। खोपड़ी में धन डालने लगे परन्तु खोपड़ी नहीं भरी। सिकन्दर ने फिर समुद्र से पूछा यह खोपड़ी क्यों नहीं भरती जबकि गाड़ियां भर गईं।

फिर समुद्र से आवाज आई—सिकन्दर यह मनुष्य की खोपड़ी है, यह कभी नहीं भरेगी। तुम्हारे पास धन का अतुल भंडार है फिर भी तुम्हारी तृष्णा नहीं गई। विश्वविजयी हो जाने पर भी तुमने नाहक समुद्र पर हमला बोल दिया। इच्छा आकाश के समान है। इसका कोई अन्त नहीं है।

क्या आप जानते हैं ?

जवानी को चौपट कर देती है सिगरेट, काफी और धूप

सेट लुईस यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मैडीसन विभाग के अध्यक्ष डा. ग्रेग ब्राह्मम के अनुसार सिगरेट, कॉफी और अधिक कड़ी धूप चेहरे की त्वचा की कांति को समाप्त कर देती है तथा जवानी में असमय ही ग्रहण लगा डालती है। डा. ब्राह्मम के अनुसार सिगरेट का धुआं कॉफी में स्थित निकोटीन एवं तेज धूप के कारण त्वचा की प्राकृतिक चमक समाप्त होने लगती है, साथ ही हारमोन में अनेक गड़बड़ियां उत्पन्न हो जाती हैं। इससे त्वचा में झुर्रियां उत्पन्न हो सकती हैं तथा सैक्स संबंधी कमजोरियां उत्पन्न हो सकती हैं। इन कारणों से जवानी में ही असमय बुढ़ापा झलकने लगता है।

भूल गया भगवान को

खूब सजाए मंदिर मानव, भूल गया भगवान को
काम क्रोध को कसकर पकड़ा, छोड़ दिया ईमान को
बाहर दुनियां जगमग करती, अन्धकार में जीता है
अमृत के धोखे में मानव, जहर हलाहल पीता है
डिब्बे में पेकिंग सुन्दर है, पर अन्दर में रीता है
सौ-सौ कसमें झूठी खाकर, हाथ उठाई गीता है
जन्म पूर्व ही मार रहे हैं, मात-पिता सन्तान को
काम क्रोध को कसकर पकड़ा, छोड़ दिया ईमान को

धन को ईश्वर मान लिया पर बात धर्म की करता है
नेता बनकर दीन दुःखी का, शोषण पूरा करता है
जनहित में कानून बना, अपराध स्वयं ही करता है
सत्य अहिंसा बेच बेच कर, लक्ष्मी से घर भरता है
कुत्ता पाले बहुत प्यार से दुत्तकारे इन्सान को
काम क्रोध को कसकर पकड़ा, छोड़ दिया ईमान को

गंगाजल की महिमा गाता, सुरापान भी करता है
दिन में राम भक्त, रजनी में, बनकर असुर विचरता है।
रिश्वत को ही दान समझता, दम्भ धर्म का भरता है
अधर्म में ही जीता है बस, अधर्म में ही मरता है
कथनी करनी सब में इसने, बसा लिया शैतान को
काम क्रोध को कसकर पकड़ा, छोड़ दिया ईमान को

फूलों की आशा है लेकिन, वृक्ष कंटीले बोता है
माखन के बदले में मानव, चूना खाकर रोता है
जगा रहे हैं सद्गुरु फिर भी, तान चादरिया सोता है
कामभोग में फंसकर अपना, अमूल्य आयुष खोता है
कहां भूलकर भी करता है, 'ललित' याद भगवान को?
काम क्रोध को कसकर पकड़ा, छोड़ दिया ईमान को

○ साध्वी ललित प्रभाजी

कहानी

चम्मच की चोरी

कम्बख्त नाक कटवाएगा, भालू मामा ने शंकू सियार को देखते हुए मन ही मन कहा। बात भी कायदे की थी। भला बताइए, कोई किसी के यहां जाता है तो कभी चम्मच की चोरी थोड़े ही करता है। अब पता नहीं किसी और ने उसे देखा कि नहीं पर भालू मामा की निगाहों से शंकू सियार बच न सका। हुआ यह कि शंकू ने रबड़ी खाने के तुरन्त बाद एक चांदी की चम्मच अपनी जैकेट में छुपा ली थी।

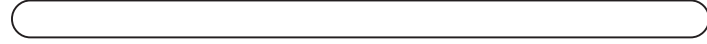
शंकू सियार की ये हरकत देख भालू मामा तड़प उठा—सोचा— इस बेईमान, बदजात को साथ न लाया होता तो अच्छा था। सारा जंगल वहां उपस्थित था। होली की खुशी में शेरू राजा ने दावत दी थी। ऐसे में एक चम्मच की चोरी? शर्म आनी चाहिए इस बछिया के ताउ को। अब कैसे भीगी बिल्ली बन मुझे देख रहा है टुकुर-टुकुर।

अच्छा होता मैं इसे संग न लाता। अब क्या करूं? क्या न करूं? कैसे समझाऊं?— भालू मामा मन ही मन जल रहा था। अपने मन ही मन बोला—चम्मच तो इसने अपनी जैकेट में डाल ली है। काश, किसी ने देखा न हो। फिर तुरन्त ही एक युक्ति उसे सूझी। खुशी में वह झूम उठा। ये ठीक रहेगा—वह मन ही मन हर्षित हुआ। उसे अपनी बुद्धि पर गर्व होने लगा। मन ही मन वह बोल उठा कि अगर किसी ने शंकू सियार को चम्मच—चुराते देख लिया हो तो तुरन्त पकड़ लेगा, वरना एक चम्मच की चोरी तो बरकरार रहनी ही है।

'सुनिए सुनिए, सब भाई-बहनो! सुनिए तालियां बजाते हुए भालू मामा ने सब को अपनी ओर आकर्षित करना चाहा। फिर तनिक रुक कर शेरू राजा की ओर देखते हुए 'राजन् अगर आप की इज्जात हो तो मैं एक जादू का खेल दिखाना चाहूंगा।'

हां हां, क्यों नहीं? शेरू राजा ने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया। बगल में हाथी दादा बैठा था। वह भी बोला, 'हां, हां भई! जादू देखे बहुत दिन हुए। भालू भइया, हो जाओ चालू।'

सबकी ओर एक नजर दौड़ाते हुए भालू मामा बोले 'सुनिए, सुनिए ये एक चम्मच उठाते हुए वह बोला इसे मैं अपनी जेब में डालता हूं और निकालूंगा किसी और की जेब से।'



‘अच्छा।’ हाथी ऊंट दोनों एक साथ बोल पड़े। गधा और बंदर चिंटू जो झूठे बर्तन समेट रहे थे एक साथ पूछ बैठे, ‘ऐसा हो सकता है, क्या?’

हां जी क्यों नहीं? ये चम्मच अपने से दूर बैठे किसी अन्य भाई की जेब से निकाल सकता हूँ।’

सब शांत हो उसको देखने लगे। भालू मामा ने शंकू सियार को खड़ा होने को कहा। शरमाते हुए वह खड़ा हो गया। सशंकित मन से वह एकटक भालू मामा को देख रहा था। तभी भालू मामा ने अपनी आवाज में तनिक और माधुर्य घोलते हुए कहा, ‘बंदर भाई, जरा देखना शंकू की जेब।’

‘ऐ! ये क्या? चिंटू बंदर ने उसकी जैकट टटोलते हुए कहा। फिर उसकी जैकट की जेब से हाथ निकालते हुए कहा, ‘वाह! कमाल कर दिया, भालू मामा आपने। कहां की चीज कहां निकाली?’

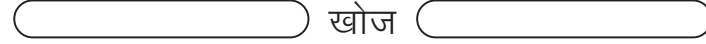
सबने तालियां बजाईं। भालू मामा की प्रशंसा खूब हुई। घर लौटते हुए शंकू सियार अपने को रोक नहीं सका और पूछ ही लिया, ‘मामा कुछ भी हो तो तुम मजमा बहुत अच्छा लगा लेते हो। मुझे अपनी उस चम्मच के जाने का अब जरा भी दुःख नहीं लग रहा।’

‘अरे बेवकूफ!’ – भालू मामा ने उसे टोकते हुए कहा, ‘जरा घर के पास तो आ जाने दे। देख, तू चम्मच ही चाहता था ना, ये ले चांदी की चम्मच। भगवान के लिए आइंदा कभी चोरी मत करना। इस बार तो मेरे मजमे ने तुझे बचा लिया है, बल्कि मैं तो कहूंगा कि तुझे किसी ने देखा नहीं, चम्मच चुराते हुए वरना ये चम्मच की चोरी तुझे जेल की हवा खिलवा ही देती। खा कसम खा कि ऐसी गलती फिर न करूंगा।’

‘खाई कसम’— यह कहकर शंकू सियार ने अपने कानों पर हाथ लगा लिया।
प्रस्तुति—:गरिमा जैन

• अगर आप की अपनी गलती हो तो तुरंत स्वीकार कर लें और भविष्य में न करने करने का संकल्प करें।

• दूसरे व्यक्ति के विचारों के प्रति सम्मान दिखाएं उसे यह कभी न कहें की आप गलत हैं



खोज अब मक्की से बनेगा प्लास्टिक

सन् 1869 में जब अमरीका निवासी जॉन वेजली हयात ने सबसे पहले प्लास्टिक का निर्माण किया था, तब उन्हें सपने में भी विश्वास नहीं था कि इस प्लास्टिक से बनी वस्तुएं एक दिन पूरी दुनियां में इस कदर छा जाएगी कि मामूली बटन से लेकर विशाल जलपोतों तथा वायुयानों में भी इसका भरपूर प्रयोग होगा। प्लास्टिक के गुण जैसे जंग ना लगना, टूट फूट बेहद कम, रंग रोगन की कोई आवश्यकता नहीं आदि की वजह से इसे सभी ने अपनाया व भरपूर सराहा। लेकिन लम्बे समय तक खराब न होने का गुण आज पूरी दुनियां के लिए सिरदर्द बन चुका है। एक मोटे अनुमान के अनुसार प्लास्टिक की एक बोतल को अगर मिट्टी में गाड़ दिया जाए तो इस बोतल को पूरी तरह नष्ट होने में 500 साल लग जाते हैं। प्लास्टिक को बनाने के लिए जिन तत्वों का प्रयोग होता है उसमें कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, आक्सीजन।

फेफड़ों में जकड़न से लेकर यकृत कैंसर तक फैलाने वाले इस प्रदूषण को रोकने के लिए फ्रांस के वैज्ञानिकों ने मक्की के स्टार्च यानि मांड की सहायता से ऐसा प्लास्टिक बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है, जो काफी जल्दी ऐसे तत्वों में विघटित हो जाता है, जिस पर कीटाणु आसानी से हमला कर उसे पूरी तरह नष्ट कर देते है।

क्लोरीन, फ्लोरिन, सिलिकॉन आदि प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसके अलावा प्लास्टिक को बनाते वक्त जो रंग, स्थायीकारक पदार्थ आदि डाले जाते हैं, उन्हें भी तमाम हानिकारक पदार्थों की श्रेणी में ही रखे जाते हैं। उपरोक्त सभी तत्वों को निश्चित मात्रा में मिलाकर प्लास्टिक बनाया जाता है, जोकि रासायनिक दृष्टि से एक लंबी कार्बन श्रृंखला वाला कार्बनिक यौगिक अर्थात् पालीमर हैं।

पिछले कुछ दशकों में तो प्लास्टिक से बनी वस्तुओं की बाढ़ सी आ गई है, लेकिन अफसोस की बात है कि 90 प्रतिशत से अधिक सामान घटिया प्लास्टिक का बना होता है, जो पर्यावरण व समूचे जीव जगत के लिए बेहद हानिकारक सिद्ध हुआ है। चूंकि घटिया प्लास्टिक सस्ता होता है, इसलिए इन्हीं की मांग भी ज्यादा है। प्लास्टिक कूड़े की तो 98 प्रतिशत मात्रा इसी घटिया प्लास्टिक की ही होती है।

एक या दो बार प्रयोग करने के बाद चूँकि इन थैलियों को फेंक दिया जाता है इसलिए जल्द ही इनके ढेर जगह-जगह नजर आने लगे। इटली में करीब 90-110 अरब थैलों का प्रतिवर्ष उपयोग होता है, यहीं नहीं अमरीका जैसे विकसित देश में एक से डेढ़ करोड़ किलो प्लास्टिक हर वर्ष कूड़े के रूप में फेंका जाता है। विकसित ही नहीं विकासशील देशों में भी प्लास्टिक के ढेर खतरनाक ढंग से बढ़ते चले जा रहे हैं।

प्लास्टिक सूर्य की रोशनी में थोड़ा सा विघटित होकर ऐसे रसायन व खनिज तत्व वायुमंडल में छोड़ता है, जो संपूर्ण जीवन, चाहे वो पेड़ पौधे हों या जीव जंतु, की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया यानी प्रकाश संश्लेषण को प्रभावित करते हैं। प्रकाश संश्लेषण को उपरोक्त विवरण में जीव जंतुओं को इसलिए जोड़ा गया क्योंकि शाकाहारी जंतु उन पेड़ पौधों को खाकर ही जीवित रहते हैं जो प्रकाश संश्लेषण द्वारा भोजन बना विकसित होते हैं। इसी प्रकार मांसाहारी जंतु भी शाकाहारी जंतुओं को खाते हैं यानी अगर प्लास्टिक प्रदूषण की वजह से प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया प्रभावित होगी तो धरती पर जीवन रहेगा ही नहीं। पानी में पड़ा प्लास्टिक भी तमाम तरह के रसायनों को विघटित कर पानी को प्रदूषित करता है।

आज दुनियां भर में लोगों को प्लास्टिक प्रदूषण ने चिंतित कर दिया है, क्योंकि प्रकाश संश्लेषण को प्रभावित करने के अलावा प्लास्टिक प्रदूषण मनुष्य में कई रोगों को जन्म देता है। फेफड़ों में जकड़न से लेकर यकृत कैंसर तक फैलाने वाले इस प्रदूषण को रोकने के लिए फ्रांस के वैज्ञानिकों ने मक्की के स्टार्च यानि मांड की सहायता से ऐसा प्लास्टिक बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है, जो काफी जल्दी ऐसे तत्वों में विघटित हो जाता है, जिस पर कीटाणु आसानी से हमला कर उसे पूरी तरह नष्ट कर देते हैं।

वैज्ञानिक इन दो तरीकों से अच्छी तरह परींचित है जो प्लास्टिक को नष्ट करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

इसमें जो पहला तरीका है उसके अंतर्गत प्लास्टिक तैयार करते समय कच्चे माल में ऐसा सक्रिय पदार्थ ऐक्टिव एलिमेंट मिला दिया जाता है, जो सूर्य की पराबैंगनी किरणों अल्ट्रावायलेट रे की उपस्थिति में तुरंत सक्रिय हो प्लास्टिक पालिमेर की लंबी कार्बन श्रृंखला को तोड़कर इतनी छोटी श्रृंखला में बदल देता

है जिस पर कीटाणु आसानी से आक्रमण कर सकते हैं।

दूसरा तरीका बायोडीग्रेडेबल प्लास्टिक बनाने का है, जिसमें प्लास्टिक निर्माण के समय करीब 6 प्रतिशत मक्की का स्टार्च तथा एक ऑक्सीजन पदार्थ मिला दिया जाता है। आक्सीकारक पदार्थ के रूप में अधिकतर वनस्पति तेल डाला जाता है। इस तरह के प्लास्टिक को कूड़े की तरह जमीन पर फेंकते ही धरती में मौजूद खनिज तत्व आक्सीकारक पदार्थ से मिलकर फैंरोक्साइड नामक यौगिक बनाते हैं, व यही फैंरोक्साइड प्लास्टिक पालिमेर की लंबी कार्बन श्रृंखला को तोड़ देते हैं।

इस रासायनिक प्रक्रिया के साथ मिट्टी में मौजूद कीटाणु प्लास्टिक को बनाते वक्त डाले गए मक्की के स्टार्च को तेजी से विघटित करने लगते हैं, जिसकी वजह से प्लास्टिक की ज्यादा से ज्यादा सतह आक्सीकारक पदार्थ व खनिज तत्वों की रासायनिक प्रक्रिया के लिए खुलती चली जाती है। फलस्वरूप प्लास्टिक तेजी से नष्ट हो जाता है। प्लास्टिक का इस प्रकार विघटित होना ताप तथा वायुमंडलीय आद्रता की नमी पर भी निर्भर करता है।

फ्रांस में बने इस तरह को प्लास्टिक के पर्यावरण प्रेमियों ने न केवल सराहा है, वरन् सभी से मक्की के स्टार्च से बने इस प्लास्टिक को ही उपयोग में लाने पर जोर दिया है। तमाम अन्य यूरोपीय देशों जैसे इटली तथा जर्मनी ने भी इस प्लास्टिक को बनाने में गहरी रूची दिखाई है और शायद जल्दी ही भारत में भी इस तरह का प्लास्टिक बनने लगे। मक्की के स्टार्च से बना शीघ्र विघटित हो जाने में सक्षम इस प्लास्टिक का अविष्कार निश्चित ही एक क्रांतिकारी खोज है, जिससे पर्यावरण का खतरा तो काफी हद तक मिटेगा ही तमाम तरह के रोगों से भी मुक्ति मिलेगी।

○ प्रस्तुति-साध्वी समताश्री

तरस आ रहा धार्मिक जन कैसा जीवन जीता है
मन में कपट-योजनाएं पर हाथों में गीता है
जीवन दया के लिए छानकर पीता जो पानी को
वही खून बिन छाना लोगों का कैसे पीता है
—आचार्य रूपचन्द्र

कुदरत का कहर

पानी में लाशें तैरें और मछली सम तड़फाया है।
महाकाल बन सुनामी आई, ताण्डव-नृत्य दिखाया है।।

कुदरत ने ये कहर मचाया।
बन अकाल लाखों को खाया।
निगल गई बिन मौत ये लहरें सब कुछ साथ बहाया है।
पानी में लाशें..।।

भक्षक ये भूकम्प हो गया।
पराधीन इंसान रो दिया।
सागर ने सीमा छोड़ी और कैसा प्रलय मचाया है।
पानी में लाशें..।।

कितनी लाशें साथ जलाई।
कितनी को पानी ने खाई।
भाई-बहिन-पत्नी-माता-बेटे से बाप छुड़या है।
पानी में लाशें..।।

जित देखो पानी ही पानी
महाविनाश की कहे कहानी।
बंजर हो गयी धरती कितने परिवारों को खाया है।
पानी में लाशें..।।

सूने हैं घर-द्वार देख लो।
भूले बच्चे प्यार देखलो।
'पारदर्शी' सब छोड़ के भागे अपना प्राण बचाया है।
पानी में लाशें..।।

—पारदर्शी

वैज्ञानिक खोजों से गर्भस्थ अभिमन्यु की चक्रव्यूह दीक्षा प्रमाणित

अभिमन्यु ने गर्भ में ही चक्रव्यूह की सरंचना और उसे छिन्न-भिन्न करने की विधि का ज्ञान प्राप्त कर लिया था, पिता अर्जुन कहानी कह रहे थे और गर्भवती माता के साथ-साथ गर्भ में पल रहा अभिमन्यु भी कथा सुन रहा था। यह महाभारतयुगीन कहानी चाहे किवंदती ही क्यों न हो, इसका अस्तित्व आज तक बना हुआ है। पिछले एक दशक से चिकित्सा विज्ञान की गहरी खोजबीन और अनुसंधान के बाद मनोवैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि भ्रूण पर माता की चभावनाओं, सुख दुख चिंता चरित्र तथा व्यवहार का गहरा असर पड़ता है। वह सुन सकता है। इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि गर्भाशय के अंदर ही जन्म से काफी पहले ही बहुत सी बातों की जानकारी भ्रूण को हो जाती है।

यह निश्चित रूप से सिद्ध हो चुका है कि गर्भ के छठे महीने से ही गर्भस्थ शिशु सुनने भी लगता है तथा मां की बोली पर शरीर को हिलाने डुलाने लगता है। चार पांच महीने का भ्रूण संगीत बजने पर आवश्यक रूप से प्रतिक्रिया करता है। दस बीस साल पहले तो इस बात की खिल्ली उड़ाई जाती थी कि क्या छह महीने का भ्रूण चैतन्य होता है लेकिन आज उसी तथ्य को लोग स्वीकार करने लगे हैं।

सामान्य रूप से मस्तिष्क की तरंगे आठवें से नवे महीने में प्रारंभ हो जाती हैं लेकिन अध्ययनकर्ताओं के अनुसार ये पांचवें महीने से ही शुरू हो जाती हैं।

इसी तरह गर्भ के पांचवें से गर्भस्थ शिशु हिलने डुलने लगता है। सातवें तथा आठवें महीने के शिशु की जब एक्सरे से तस्वीर ली गयी तो उसे अंगूठा चूसते, सिर उठाते या हाथ फैलाते पाया गया। चिकित्सा वैज्ञानिकों का यह दावा है कि भ्रूण बौद्धिक रूप से इतना परिपक्व होता है कि वह माता पिताकी प्रेममयी वाणी को महसूस कर लेता है और जन्म के तुरंत बाद यदि कमरे में वही आवाज आये तो 1-2 घंटे का जन्मा बालक आवाज पहचान लेता है।

यह बात अब दावे के साथ कही जा सकती है कि गर्भवती माता के क्रिया कलापों और विचारधारा का बालक के व्यक्तित्व पर असर पड़ता है तथा वह अनुकूल और प्रतिकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यह देखा गया है कि यदि माता-धूम्रपान कर रही हो तो स्वयं को प्राप्त होने वाली आक्सीजन गैस की कमी से



शिशु जान लेता है कि मां धूम्रपान कर रही है। इसी प्रकार गर्भावस्था में यदि मां हमेशा परेशान व चिंतित रहे तो उसके तनाव जन्य हार्मोन शिशु पर अपना प्रभाव डालते हैं। इसीलिए हमारे यहां शुरू से ही कहा जाता है कि गर्भवती को प्रसन्न रहना चाहिए।

वह हर समय सुखद कल्पनाएं करें, सुंदर-सुंदर बच्चों की तस्वीरें लगाएं। क्रोध, झगड़ा इत्यादि न करें। सातवें महीने में उसकी गोद भी भरी जाती है, बढ़िया खिलाया पिलाया जाता है, उपहार आदि दिए जाते हैं जिससे कि वह प्रसन्न व संतुष्ट रहे।

अमरीकी वैज्ञानिकों का मत है कि तीन महीने के गर्भस्थ शिशु को छुने, सुनने व स्वाद का ज्ञान हो जाता है। यह देखा गया है कि यदि गर्भनाल से भ्रूण के अंदर जाने वाले तरल में अधिक शक्कर मिला दी जाये तो बालक उसे जल्दी जल्दी पीता है।

आज यह कहा जा सकता है कि गर्भस्थ शिशु एक संवेदनशील स्मरणशक्ति से पूर्व सचेत प्राणी है। अतः गर्भावस्था के नौ महीने में उस पर जो बीतता है, वही उसके व्यक्तित्व, उसकी प्रेरणा व महत्वाकांक्षाओं को गढ़ता है।

इन नये अनुसंधानों का आधार बनाकर रूस जैसे अनेक देशों में गर्भवती माताओं को विशेष रूप से प्रेरक वातावरण में रखा जाता है, ताकि होने वाली संतान पुष्ट और बौद्धिक रूप से परिपूर्ण बने।

क्या हम अपने पूर्वजनों और आधुनिक विज्ञान से प्रेरणा लेकर गर्भावस्था से ही परिपूर्ण मानव के निर्माण के लिए कोई कदम उठा रहे हैं। अणुओं या विषाणुओं का पता लगाना और उन्हें पहचानना मुमकिन हो जाता है। यह जैविक आतंकवाद को रोकने के लिए बहुत कारगर हैं। इसके अविष्कार और खोज निर्देशक मार्क व्हाइट का कहना है कि दुनियां में तेजी से बढ़ रहे जैविक आतंकवाद के खिलाफ इस क्षेत्र की प्रौद्योगिकी को उचित तरीके से इस्तेमाल करके समाज का काफी हित किया जा सकता है।

प्रस्तुति—: अरुण तिवारी

**जब न्याय में लोभ का उदय हो जायेगा तब
न्याय विकृत हो जायेगा।**



योग विज्ञान

गोमुखासन

यथा नाम तथा गुण। प्राचीन महर्षियों, योग मनीषियों ने अनेक योगासनों का अविष्कार किया, जिन पर यह कहावत सही उतरती है। योगासन से बनने वाली शारीरिक आकृति तथा उसके प्रभाव में अद्भुत साम्य दृष्टिगत होते हैं।

इस क्रम में योग मनीषियों ने गाय के मुख सदृश 'गोमुखासन' का प्रचलन किया। यह आसन करते समय व्यक्ति के दोनों घुटनों की आकृति गाय के मुख के समान बन जाती है। अतः इसे गोमुखासन का नाम दिया गया।

गोमुखासन अकेला ही शरीर के सभी बड़े-छोटे जोड़ों को ठीक कर देता है। यह जोड़ों को लचीला बना कर हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है तथा सीने को सुडौल बनाकर फेफड़ों और हृदय की शक्ति भी बढ़ाता है।

आसन की विधि :

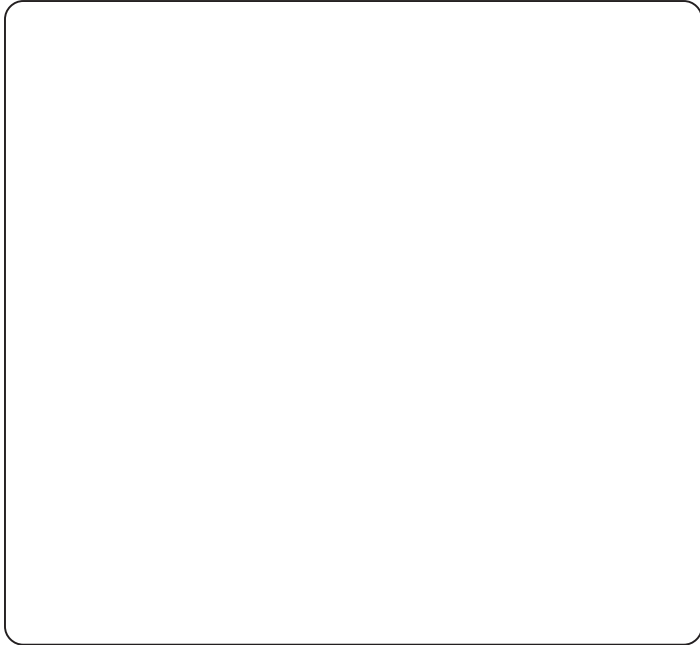
जमीन पर घुटने टेक कर बैठें, जिससे शरीर का पूरा भार घुटनों पर ही पड़े। घुटनों को एक दूसरे से चार इंच दूर रखें। टखने तथा पैरों की अंगुलियां जमीन पर इस प्रकार पड़ी रहे कि अगूठे तो एक दूसरे से सटे रहें। किंतु एडियां दूर फैली हुईं और ऊपर उठी रहें। यहां एडियों, तलवों और अगूठों से एक समान बन जायेगा। इस कमान पर धीरे-धीरे शरीर का वजन तलवों पर देते हुए बैठ जाएं। हथेलियों को जांघों पर रख लें और नाक की सीध में देखें।

अब धीरे-धीरे दाहिने हाथ को पीठ पर ले जाएं। इस हाथ को कोहनी पर मोड़ कर हथेली के पिछले भाग को गर्दन की ओर ले जाएं। दाहिने हाथ की अंगुलियों को सीधा रखें। अब अपने हाथ को कोहनी से मोड़ लें तथा इसे ऐसे उठाएं कि बायीं हथेली बायें कंधे पर पड़े। अब दाहिने हाथ से बायें हाथ की अंगुलियों को थोड़ा टेढ़ा कर के, उन्हें आपस में फंसा कर, खींच लें और इसी स्थिति में दस सेकेंड तक रहे। फिर पकड़ ढीली कर दें तथा उन्हें खोल दें। धीरे-धीरे हाथों को जांघ पर ले जाएं। कुछ देर बाद, दूसरे दौर में, इसी प्रकार बायें हाथ की अंगुलियों को पकड़ कर खींचें और दस सेकेंड इसी आसन में रह कर, अंगुलियों की पकड़ ढीली कर, हाथों को जांघों पर ले जाएं। इस प्रकार प्रतिदिन चार बार यह आसन करें। जो लोग इसमें कठिनाई महसूस करें व जहां तक हाथों को ले जा सकें, वही तक ले जाएं। धीरे-धीरे अभ्यास से हथेलियां पकड़ तक पहुंच जाएंगी।



लाभ: गोमुख आसन में अंगुलियों के जोड़ों, कोहनियों, कंधों के जोड़, पैरों की अंगुलियों टखनों, घुटनों तथा कूल्हे के जोड़ों की प्रभावशाली ढंग से कसरत हो जाती है। मांसपेशियों तथा स्नायु सशक्त, सक्रिय और स्वाभाविक बन जाते हैं तथा दर्द का शमन होता है। जोड़ों की मांसपेशियों की सक्रियता के कारण उन जगहों पर से दूषित पदार्थ निकल जाते हैं। जोड़ों पर बहने वाला तरल पदार्थ ठीक हो जाता है। इससे सिकुड़न और दर्द मिट जाते हैं। यह जोड़ों को लचीला बना कर हड्डियों को मजबूत बनाता है। मधुमेह में भी यह आसन उपयोगी है। यह अंडकोषों की वृद्धि को रोकता है और प्रोस्टेट ग्लैंड के दोषों को दूर करता है प्रजनन अंगों पर पड़ने वाले अनुकूल दबाव से बहुमूत्र के रोग में भी इससे लाभ मिलता है।

○ **आचार्य अविनाश सिंह**



प्रेतात्मा अतृप्त वासना की उपज

भूत प्रेत का अस्तित्व विश्व भर में विवाद का विषय बना हुआ है। इस बारे में भरपूर प्रमाण मिलने के बावजूद विज्ञान इसे पूरी तरह मानने को तैयार नहीं है। हर देश में अभिशप्त मूर्तियां, महल और खंडहर मौजूद हैं। वैज्ञानिक इन पर शोध कर रहे हैं। शायद कुछेक वर्षों में इनकी गुत्थियां सुलझ जाए।

धन्य हैं भारत के साधु-योगी, जिन्होंने, हजारों साल पहले इस रहस्य को जान लिया था। यह विषम महाविज्ञान के अंतर्गत आता है। कई ग्रंथ इनके कारणों और निवारणों से भरे पड़े हैं। भौतिक शरीर पांच तत्वों का बना है, जिनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश शामिल हैं। इसके अलावा प्राण, या आत्मा तत्व हैं, जिसके निकल जाने पर जीवन समाप्त हो जाता है। पर जैसा भौतिक शरीर है, उसी तरह सूक्ष्म शरीर भी होता है, जिसमें आत्मा निवास करती है।

भौतिक शरीर सब देखते हैं। दूसरा सूक्ष्म शरीर है। ये अनेक सूक्ष्म केंद्रों से बना है। प्रमुख केंद्र 108 हैं। इन्हीं पर ध्यान लगा कर 108 बार मंत्र जाप करने का निर्देश है। माला में 108 मणियां इन्हीं की प्रतीक हैं। ये केंद्र गुप्त रखे जाते हैं। कोई गुरु इन्हें जल्दी नहीं बताता। कुंडलिनी के सात चक्र भी इस सूक्ष्म शरीर की ही रचना है। मनुष्य में नीचे के तीन चक्र ही इसके प्रमाण पर सक्रिय रहते हैं। इसी कारण से वह सामान्य प्राणी बन कर रह जाता है। अगर सातों चक्र सक्रिय हो जाएं तो वह महामानव बन जाएगा।

शरीर का प्रत्येक केंद्र अपने आप में विद्युत् कोश है, जो जीव को शक्ति प्रदान करता है। चेतना मन है, जिसके दो भेद हैं—अंतर्मन और बहिर्मन। अंतर्मन आत्मा का उपरी आवरण है। बहिर्मन इसे घेरे रहता है, जिसमें विचार चलते रहते हैं और जिसमें हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती रहती है। इन सबकी देनंदिन आवृत्ति अंतर्मन में होती रहती है, जैसे कोई डायरी हो। अंतर्मन में जन्म जन्मांतरों की स्मृतियां और संस्कार जमा रहते हैं। योग, या अन्य क्रिया से साधक जैसे ही बहिर्मन को सुप्त कर, अंतर्मन में प्रवेश करता है, उसे अपना पिछला जन्म स्पष्ट दिखाई देने लगता है। यह अंतर्मन त्रिकालज्ञ होने के कारण आगे के जन्म भी स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। इस अंतर्मन को पाकर साधक आत्मसाक्षात्कार करता है। इसे ही मुक्ति कहते हैं। आत्मा एक सर्वव्यापी तत्व है। यह अमर है। यह अलग-अलग शरीर धारण करती है। इसलिए कृष्ण ने भगवद् गीता में कहा है :

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहती पावकः।

न चैनं क्लोदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।

अर्थात्, आत्मा को न शास्त्र छेद सकते हैं, न अग्नि जला सकती है, न पानी भिगो सकता है, न वायु सुखा सकता है। आत्मा अमर है।

अब देखें, मनुष्य भूत-प्रेत कैसे बनता है। जब मनुष्य अपनी आयु पूरी कर के मृत्यु प्राप्त करता है, तब पहले सूक्ष्म शरीर के केंद्र क्षरित होते हैं, यानी सूक्ष्म शरीर कमजोर हो कर नष्ट हो जाता है, या पुनर्जन्म लेता है। अगर इच्छा बाकी हो, तो वह अपने संबंधियों के स्वप्न में आ कर इच्छा बताता है। पर अगर कोई अपघात से, जहर खा कर, या आग से जल कर मरे, तो यह सामान्य मृत्यु नहीं होती। यह अपमृत्यु हुई। शरीर तो नष्ट हो जाता है, पर वह शक्तिशाली सूक्ष्म शरीर नष्ट नहीं होता, क्योंकि इसका समय पूरा नहीं हुआ। इसकी वासना, इसके विचार ज्यों के त्यों रह जाते हैं। आत्मा भी सूक्ष्म शरीर में ही रहती है। यही भूत-प्रेत कहलाते हैं। यह बहुत भयानक स्थिति है। भूख लगती है, काम वासना जागती है, पर भौतिक शरीर न होने के कारण इच्छा तृप्त नहीं होती। ऐसा देखा या सुना होगा कि प्रेत से घिरा व्यक्ति ज्यादा खाना खाता है, बहुत पानी पीता है, या कामुक हरकतें करता है। यह सब अतृप्त इच्छा, या वासना का नतीजा है, जो आत्मा इस तरह पूरा करती है।

यह आत्मा बहुत उपद्रव करती है। किसी जीवित व्यक्ति के सूक्ष्म शरीर को दबा कर उस व्यक्ति के शरीर पर कब्जा जमा लेती है। व्यक्ति अगर दृढ़ निश्चयी है, मजबूत संकल्प वाला है, तो प्रेमात्मा उसे परेशान नहीं कर सकती। यह ऐसी ही स्थिति है, जैसे किसी घर में चोर घुस आए। घर वाला कमजोर है, तो चोर घर पर कब्जा कर लेगा। लेकिन घर वाला मजबूत हो, तो चोर को घर में घुसने ही नहीं देगा। इसलिए औरतें और बच्चे ही प्रेतों से ज्यादा प्रभावित होते हैं। औरतें और बच्चे भावुक भी बहुत ज्यादा होते हैं। अब इनसे बचने के उपाय सोचें तो सबसे अच्छा उपाय है ईश्वर उपासना। स्तोत्र पाठ करना सबसे सरल उपाय है। व्यक्ति को राम रक्षा स्तोत्र, बजरंग बाण, काल भैरव, अष्टक, शिव कवच, दुर्गा कवच, काली कवच, नरसिंह स्तोत्र उपसर्गहर स्तोत्र, महामंत्र-नमस्कार, भक्ताम्बर स्तोत्र में से किसी भी स्तोत्र का, रात को सोने से पहले और सुबह उठने के बाद, पाठ करना चाहिए। सुरक्षा अवश्य प्राप्त होगी और जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी लाभ मिलेगा।

○ सचिन डी. अंचन

बोलें तारें

मासिक राशि भविष्यफल फरवरी-2005

डॉ.एन.पी.मित्तल,पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ रहेगा। इस माह कोई नई योजना फली भूत हो सकती है, कोई पिछला रूका हुआ धन भी प्राप्त हो सकता है। समाज में यश मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। परिवारिक जनों का सहयोग रहेगा। किन्हीं सरकारी कर्मचारियोंकी पदोन्नति भी सम्भव है। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बना रहेगा। शत्रु सिर उठाएंगे, इन जातकों को अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। सेहत के प्रति सचेत रहना होगा।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अड़चनों के बाद शुभ फल देने वाला है। कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। शत्रु सिर उठाएंगे। मानसिक स्थिरता बनाए रखें। आय से अधिक खर्च होगा चाहे सुख साधनों पर ही क्यों न हो। आपके आप पास ऐसी स्थितियां बनेंगी कि आपको क्रोध आयेगा-अपने क्रोध पर काबू रखें, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है। समाज में मान-प्रतिष्ठा सामान्यतया बनी रहेगी।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्ययधिक्य देने वाला है। स्वभाव में भी क्रोध का असर रहेगा। मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परिवारजनों में असामन्जस्य रहेगा। इस माह का केवल प्रथम सप्ताह कुछ शुभ प्रदायक है जिसमें कोई शुभ सूचना मिल सकती है या कोई मंगल कार्य संभावित है। इस समय समाज में मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। परिवार जनों से विचार भिन्नता के कारण मानसिक उद्विगना रहेगी। यह पूरा महीना व्यावहारिक स्थिति से तथा आर्थिक दृष्टि से उतार-चढ़ाव लिये हुए होगा। कानून के भी कुछ झंझट उठ सकते हैं और शत्रु भी परेशान कर सकते हैं जिसका समझौते के रूप में मास के अन्त तक हल निकलने की सम्भावना है।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर अच्छा ही कहा जाएगा। परिवार व कुटुम्बजनों में असामन्जस्य रहेगा

किन्तु बाद में मेल जोल का वातावरण बन जाएगा। इस माह का उत्तरार्ध अधिक शुभ फलदायक है। समाज में मान प्रतिष्ठा, व यश की वृद्धि होगी। जो भी योजनाएं पूर्व में बनाई होंगी वे फलीभूत हो सकती हैं। कोई शुभ समाचार मिल सकता है। कुछ लोग नई वस्तुओं की खरीदारी करेंगे। शत्रु सिर उठायेंगे किन्तु ये जातक उन पर विजयी होंगे। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा।

कन्या—कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध से उत्तरार्ध में अच्छा फल देने वाला है। वैसे स्वभाव में क्रोध अधिक रहेगा। शुभ परिणामों के लिये क्रोध पर काबू रखना होगा। परिवार जनों में असामन्जस्य सम्भावित है, कोई बीच का रास्ता निकालें। खाने पीने के मामलों में बदपरहेजी स्वास्थ्य हानि कर सकती है। संतान के विषय में भी कोई चिंता सम्भावित है। कुछ दूर की यात्राएं भी हो सकती हैं जो बेकार नहीं जाएगी।

तुला—तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक परिश्रम द्वारा लाभ कराने वाला है। काफी दौड़ धूप करनी पड़ेगी। संगी साथी भी काम में मदद देने लगेंगे। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। स्वजनों से वैर—विरोध होकर सुलह होने के आसार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से छोटी मोटी बीमारी होगी जो ठीक हो जाएगी। सुदूर यात्राएं होंगी जिससे सुख की अनुभूति होगी। नई योजनाएं भी कार्यान्वित होंगी।

वृश्चिक—वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह मिला जुला प्रभाव लिये हुए होगा। नये लोगों से सम्पर्क बनेंगे। खर्च की कुछ अधिकता रहेगी। मानसिक चिन्ता रहेगी। इस माह का आखिरी सप्ताह इन जातकों के लिये शुभ कहा जा सकता है। घर में कोई मांगलिक कार्य सम्भावित है। अचानक कहीं से पैसा भी मिल सकता है। इन जातकों को अपनी सेहत के प्रति सचेत रहना होगा।

धनु—धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से शुभ फलदायक है। माह के आरम्भ से ही व्यापार वृद्धि गोचर होने लगेगी। बड़े लोगों से मेल जोल होगा। परिवार जनों में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। कुछ लोग बहकाने की कोशिश कर सकते हैं, उनकी बातों में न आएं। अपनी आत्मा की आवाज को सुन कर कार्य करें। इस माह का दूसरा तथा तीसरा सप्ताह मिश्रित फल दायक है।

मकर—मकर राशि के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आर्थिक दृष्टि से तृतीय सप्ताह में अति शुभफलदायक है जब कि बाकी सप्ताहों में लाभ तो होगा पर कोई न कोई अनावश्यक खर्च भी होगा। परिवार के लोगों में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान, यश प्रतिष्ठा बनी रहेगी। कुछ कानूनी अड़चनें आयेंगी मगर दूर हो जायेंगी। कुछ जातक राजनीतिक सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। वाहन चलाने में सावधानी बरतें।

कुम्भ—कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अवरोधों के पश्चात अल्प आर्थिक प्राप्ति का है। केवल प्रथम सप्ताह फिर भी संतोषजनक फल दायक है। भूमि भवन के मामलों में सचेष्ट रहना होगा। अपने ही प्रतिकूल व्यवहार करेंगे। मानसिक रूप से चिन्तित रहेंगे। कोई बीमारी आपको घेर सकती है। अनाप—शनाप चीजें खाने से बचें। इस माह में ये जातक कोई नया कार्य हाथ में न लें।

मीन—मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार—व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर अच्छा फल देने वाला है। परिश्रम तो अधिक करना पड़ेगा किन्तु लाभ मिलेगा। कोई नई योजना भी कार्यान्वित हो सकती है। इस माह का प्रथम सप्ताह शुभ फल दायक नहीं है, अन्य तीनों सप्ताह अच्छे रहेंगे। शत्रु सिर उठायेंगे किन्तु विजय इन जातकों की ही होगी। बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करें। आत्म विश्वास बनाएं रखें।

इति शुभम्

लोग सोचते हैं हम हिन्दु हैं मुसलमान हैं
अपनी कौम का उनके दिलों में अभिमान है
पर हैरान हूं मैं वे कैसे भूल जाते हैं
कि हम एक हैं क्योंकि सबसे पहले इंसान हैं।

राजधानी समाचार

परम पूज्य गुरुदेव महामनस्वी आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज, परमपूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज, सरला मना साध्वी श्री मंजुश्री महाराज अपने धर्म परिवार के साथ सानन्द विराजमान हैं। मानव मंदिर केन्द्र द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियां निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। सर्दी का मौसम होने से विदेशों से दर्शनार्थियों का आवागमन बढ़ जाता है।

देश विदेशों से आने वाले भक्तजनों का पहला वाक्य यही होता है कि यह आश्रम वास्तव में आश्रम है। इसके आस पास के वातावरण में भी आध्यात्मिकता की खुशबु आती है। इस के द्वार में प्रवेश करते ही लगता है हम स्वर्ग में आ गये हैं। यहां का शांत वातावरण यहां की शुद्धता, पवित्रता बच्चों की मधुर मुस्कान, संतजनों के जप, तप से निर्मित आध्यात्मिक शक्ति ये सब कुछ मनुष्य को अपनी और खींच लेते हैं। अभी दो जनवरी को "इंटरनेशनल नैचरोपैथी ओर्गनाइजेशन" ने अपनी मासिक मीटिंग मानव मंदिर द्वारा संचालित एम. एस. आर. नैचरोपैथी योगा एण्ड आयुर्वेदिक हॉस्पिटल में रखी थी। इस मीटिंग में करीब 50-60 डॉक्टरों ने भाग लिया था। मीटिंग के बाद इस आश्रम के बारे में सभी ने अपने अपने विचार रखे।

लाजपत नगर में चुम्बक चिकित्सालय के डॉक्टर गुप्ता ने कहा-गुरुजी! चुम्बक चिकित्सा तो मैं करता हूं। लेकिन यहां जैसी नहीं यहां तो लगता है। सब तरफ चुम्बक लगे हुए हैं। जहां देखता हूं वहीं खिंच जाता हूं।

इसी तरह सभी ने कहा आने वाले कल में यह संस्था बहुत आगे बढ़ जाएगी यहां की सुव्यवस्था प्रेम भावना को देखते हुए सभी सदस्यों ने फरवरी माह की मीटिंग भी यहीं करने की इजाजत मांगी। पूज्य गुरुदेव मीटिंग की आज्ञा प्रदान करते हुए फरमाया-नैचरो पैथी, योगा हमारी पैथी है। इसका जितना प्रचार प्रसार आप कर सकते हैं करना चाहिए। इस कार्य में मानव मंदिर मिशन आपके साथ है।

सन् 1993 से मानव मंदिर मिशन के तहत चल रहे गुरुकुल का भी समाज में अपना एक विशेष स्थान है। 8 बच्चों से शुरू हुए इस गुरुकुल में अब 25 बच्चे हैं। इन ग्यारह वर्षों में इस गुरुकुल से सैंकड़ों बच्चे तैयार होकर निकल चुके हैं। यहां के बच्चे वैसे तो हर क्षेत्र में कार्य करने की क्षमता रखते हैं। लेकिन कुछ बच्चे

कम्प्यूटर में कुछ बच्चे चित्रकला में तो कुछ योगा में और कुछ लडकियां पाक कला में निष्णात हैं। सभी बच्चे इंग्लिस के माध्यम से पढ़ रहे हैं। फिर भी हिन्दी व संस्कृत भाषा का ज्ञान भी बराबर चलता है। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ स्वावलम्बी जीवन, साधना, सेवा व आपसी सहयोग की शिक्षा भी दी जाती है। बच्चों का सर्वांगीण विकास हो यही इस गुरुकुल का उद्देश्य है।

भविष्य में इस गुरुकुल को विस्तार देने की योजना है। आप सभी पाठकों का सहयोग व सुझाव स्वीकार्य है।

श्री गंगानगर राज. से श्री इंद्र कुमार सरावगी के पत्र द्वारा पता लगा कि श्री प्रभु दयाल जी सरावगी "संपादक सीमा की पुकार पाक्षिक" का 18 दिसम्बर को स्वर्ग वास हो गया। वे 64 वर्ष के थे उम्र तो कोई ज्यादा नहीं थी पर मृत्यु के आगे किसी का जोर नहीं है। मानव मंदिर मिशन दिवंगत आत्मा की उत्तरोत्तर उर्ध्वगमन की कामना करता हुआ शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता है।

चुटकुले

1. यात्री 'तांगे वाले से'- भैया लाल किले के कितने पैसे लगे ? तांगे वाला-साहब! माफ करना मैं लाल किला नहीं बेच सकता। वह सरकारी सम्पत्ति हैं
2. एक आदमी किराने की दुकान पर जाकर गाता है, "मेरा जीवन कोरा कागज, कोरा ही रह गया। और एक किलो चावल देने को कहता है। दुकानदार गाकर कहता है-सारे चावल चूहे खा गए, बोरा ही रह गया।
3. पोपट लाल 'चोपट से' हमारे रिश्तेदारों ने हमें बहुत चोट दी है। उन्होंने जिस हांडी में खायी उसी में छेद किया। चोपट-आप उन्हें स्टील की थाली में खिलाते, फिर मला कैसे छेद करते।
4. एक आदमी 26 जनवरी के दिन अपनी पत्नी को कहता है कि आज के दिन लोग तो हलुवा, खीर, मिठाईयां बनाते हैं और तुम हो कि कड़वा करेला काट रही हो। पत्नी पति से- क्यों जी तुमने आजादी की लड़ाई चखी थी क्या। प्रस्तुति-साध्वी वसुमति